ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

अद्वैत वेदान्त एवं ऋग्वेद के आलोक में ब्रह्म विचार

Brahma Vichar in the light of Advaita Vedanta and Rigveda

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 22/10/2021, Date of Publication: 23/10//2021

दिनेश कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजकीय स्नातक
महाविद्यालय,
मगरहा, मिर्जापुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

अद्वैत वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही सृष्टि का मूल कारण है। जगत की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश जिस सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान के कारण सम्भव है वह ब्रह्म है। जिस तरह अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति बतायी गयी है उसी प्रकार ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में विस्तार से वर्णन किया गया है। सृष्टि के उत्पत्ति की पूर्व दशा में अपनी ही शक्ति पर आश्रित नासदीय सूक्त के जिस एक तत्व की सत्ता थी तथा जिसके तप से सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ, विविध प्रकार की यह सृष्टि जिससे अभिभूत हुई है, वह अद्वैत वेदान्त के ब्रह्म का द्योतक है। इसी प्रकार ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुष सूक्त में उद्घोषित 'पुरुष एवेदं सर्वम्' निःसंदेह वेदान्त दर्शन के 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' तथा 'ब्रह्मेवेदं सर्वम्' आदि वाक्यों से विख्यात् अद्वैत सिद्धान्त का आदि स्त्रोत है। वेदान्त दर्शन में ब्रह्म वर्णन के अनन्तर ब्रह्म साक्षात्कार को परमपुरुषार्थ माना गया है और यही मानव जीवन का चरम लक्ष्य है। ऋग्वेद के दशम मण्डल का संज्ञान सूक्त मानव जीवन के इसी चरम लक्ष्य (ब्रह्म साक्षात्कार) का स्तवन करता है।

According to Advaita Vedanta philosophy, Brahma is the root cause of creation. The origin, condition and destruction of the world is possible because of the omniscient and omnipotent being, that is Brahman. Just as in Advaita Vedanta the origin of creation is told from Brahman, similarly in the Nasadiya Sukta of Rigveda, the origin of creation is described in detail. The one element of the Nasadiya hymn which had its existence in the previous state of creation, and whose tenacity led to the creation of the universe, which has been overwhelmed by this variety of creation, is the symbol of the Brahman of Advaita Vedanta. Similarly, 'Purusha Avedam Sarvam' proclaimed in the Purusha Sukta of the Tenth Mandala of Rigveda is undoubtedly the original source of the Advaita principle known from the words 'Sarva Khalvidam Brahm' and 'Brahm Vedam Sarvam' of Vedanta philosophy. In Vedanta philosophy, the realization of Brahma is considered to be the ultimate goal of human life, after describing Brahman. The Cognizance Sukta of the tenth mandala of Rigveda eulogizes this ultimate goal of human life (Brahma realization).

मुख्य शब्दः-. अद्वैत वेदान्त. ब्रह्म विचार, एकेश्वरवाद. ऋग्वेद,नासदीय सूक्त., पुरुष सूक्त , नेति-नेति
Advaita Vedanta. Brahman thought, monotheism. Rigveda, Nasadiya Sukta., Purusha Sukta, Neti-Neti

प्रस्तावना

भारतीय दर्शनों में वेदांत को सर्वाधिक महत्वपूर्ण दर्शन माना जाता है। वेदान्त की महत्ता इस बात से प्रतिपादित होती है कि यूरोप के विद्वान बहुत काल तक भारतीय दर्शन का अर्थ वेदान्त दर्शन ही समझा करते थे। प्रारम्भ में वेदान्त शब्द का प्रयोग उपनिषद् के लिए होता था क्योंकि उपनिषद वेद के अन्तिम भाग माने गये है बाद में चलकर उपनिषदों से जितने दर्शन विकसित हुए सभी को वेदान्त नाम से जाना गया।

वेदान्त दर्शन का आधार वादरायण का 'ब्रह्म सूत्र' माना जाता है। ब्रह्म सूत्र उपनिषदों के विचारों में सामंजस्य लाने के उद्देश्य से लिखा गया है। जीव और ब्रह्म में क्या संबंध है? यह वेदान्त का मुख्य प्रतिपाद्य है। शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैत वेदान्त एकत्ववादी दर्शन है। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को एक मात्र सत्य माना गया है ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी वस्तुएं जगत ईश्वर आदि मिथ्या है। शंकर ने ब्रह्म को ही आत्मा कहा है इसीलिए अद्वैत वेदान्त में आत्मा = ब्रह्म कहकर दोनों की अभिन्नता को प्रमाणित किया गया है। शंकराचार्य ने वृहदारण्योकोपनिषद् भाष्य में आत्मा तथा ब्रह्म के एकत्व को सिद्ध करने के लिए तर्क दिया है- "आत्मव्यतिरेकेण अग्रहणात् आत्मै व सर्वम्" अर्थात् आत्मा के बिना सभी वस्तुएं अग्रहीत है। अतएव आत्मा ही सब कुछ है। उसकों संक्षेप में आत्मव्यतिरेकाभाव कहते है। अर्थात् आत्मा के बिना प्रत्येक विषय का अभाव है। अतः प्रत्येक विषय आत्मा से आन्वित है। यदि सभी विषय आत्मपूर्वक है तो आत्मा ही एक मात्र सत् है। अतः आत्मा ब्रह्म है।

ब्रह्म शब्द ऋग्वेद में साधारणतया प्रार्थना या स्तुति के मंत्र के रूप में प्रयुक्त किया गया है। इसी कारण ब्राह्मणस्पति देवता की कल्पना ऋग्वेद में की गयी है। ब्राह्मण शब्द या यज्ञ के मुख्य त्रृत्विक के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद में 'सत्' शब्द द्वारा उपनिषद् ब्रह्म का अर्थ सूचित किया गया है। ऋग्वेद में अनेक देवताओं की स्तुति की गयी है जिससे प्रतीत होता है कि ऋग्वेद का दर्शन अनेकश्वावादी है किन्तु धार्मिक चेतना एक ही देवता को श्रेष्ठ और आराध्य मानने के लिए बाध्य करती है। ईश्वर की भावना में एकता की भावना निहित है। ईश्वर को अनेक मान लेने पर उसकी अनन्तता

खण्डित हो जाती है। मानव का ईश्वर के प्रति आत्म समर्पण का भाव है जिसकी पूर्ति एक ईश्वर की सत्ता मानने से ही हो सकती है। यही कारण है कि वैदिक धर्म में ऐकेश्वरवाद की ओर संक्रमण होता है। अनेक देवताओं में जिस देवता की उपासना होती है उसे ही सर्वश्रेष्ठ सर्वशक्तिमान मान लिया जाता है। हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा के अनुसार मैकडोनेल के इसे हीनोथीज्म कहा है जो अनेकेश्वरवाद तथा ऐकेश्वरवाद के मध्य की स्थिति है। शनैःशनैः हीनोथीज्म का संक्रमण ऐकेश्वरवाद में हो जाता है।[4] "ऋग्वेद में कई मंत्र ऐकेश्वरवाद का संकेत करते है। इस संबंध में ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध मंत्र उल्लेखनीय है-

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति

अग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

अर्थात् एक ही सत् (ब्रह्म) है, विद्वान लोग उसे अनेक मानते है कोई उसे अग्नि कहता है कोई यम कोई मातरिश्वा (वायु)। इसी प्रकार एक अन्य मंत्र में कहा गया है- 'मद देवानाम् सुरत्वमेकम्' अर्थात् देवताओं का वास्तविक सार एक ही है।

अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म विचार

अद्वैत वेदान्त में एक ही तत्व माना गया है वह हैं आत्मा। जिस प्रकार माण्डुक्योपनिषद् में 'अयमात्मा ब्रह्म' महावाक्य के द्वारा आत्मा एवं ब्रह्म का ऐक्य प्रतिपादित किया गया है उसी प्रकार शंकराचार्य ने भी तर्कों द्वारा आत्मा एवं ब्रह्म का ऐक्य सिद्ध किया है। अद्वैत वेदान्त के आत्मा अर्थात् ब्रह्म ज्ञान स्वरूप है। यह प्रकाश की तरह ज्योतिर्मय है। इसी लिए ब्रह्म को स्वयं प्रकाश कहा जाता है। ब्रह्म का ज्ञान उसके स्वरूप का अंग है। यद्यपि ब्रह्म द्रव्य नहीं है तथापि वह सब विषयों का आधार है। ब्रह्म काल और दिक् की सीमा से परे है। ब्रह्म पर कारण नियम भी लागू नहीं होते हैं।

आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म पूर्ण एवं एकमात्र सत्य है। वह सर्वोच्च ज्ञान है। ब्रह्म ज्ञान से संसार का ज्ञान जो मूलतः अज्ञान है, समाप्त हो जाता है। ब्रह्म अनंत, सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान है। वह भूत जगत् का आधार है। जगत् ब्रह्म का विवर्त है परिणाम नहीं। शंकराचार्य ने केवल इसी अर्थ में ब्रह्म को विश्व का कारण माना है। इस विवर्त से ब्रह्म पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक जादूगर अपने जादू से ठगा नहीं जाता है। अविद्या के कारण ब्रह्म नानारूपात्मक जगत के रूप में दिखता है। 5

ब्रह्म व्यक्तित्व से शून्य है। व्यक्तित्व में आत्मा और अनात्मा का भेद रहता है। ब्रह्म सब भेदों से रहित है। इस लिए ब्रह्म को निर्वैयक्तिक कहा गया है। ब्रह्म निर्विकार है। उसका न विकास होता है और न ही कोई परिवर्तन होता है। वह निरन्तर एक समान बना रहता है। शंकर ने ब्रह्म को अनिर्वचनीय माना है।

ब्रह्म को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है। ब्रह्म को भावात्मक रूप से भी जनना संभव नहीं है। हम ब्रह्म के विषय में यह नहीं कह सकते की ब्रह्म क्या है? अपितु हम यह जान पाते है कि "ब्रह्म क्या नहीं है।" उपनिषदों में ब्रह्म का वर्णन नेति-नेति अर्थात् 'यह नही है' कहकर किया गया है। शंकर उपनिषदों के नेति-नेति विचार के आधार पर ब्रह्म का वर्णन करते है। इसी कराण शंकर ब्रह्म को अद्वैत बताते हुए इसकी व्याख्या निषेधात्मक रूप से करते है। शंकराचार्य ने ब्रह्म की निषेधात्मक व्याख्या के अतिरिक्त इसकों भावात्मक रूप से वर्णित किया है, जिसके अनुसार ब्रह्म सत् (real) है जिसका अर्थ है वह (unreal) नहीं है।वह चित् है जिसका अर्थ है वह अचित् नहीं है। वह आनन्द है जिसका अर्थ है वह दुःख स्वरूप नहीं है। इस प्रकार ब्रह्म सत्+चित्+आनन्द=सच्चिदानन्द है। आचार्य शंकर ने ब्रह्म के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए प्रमाण भी प्रस्तुत किया है जिसके अनुसार सबसे प्रमुख प्रमाण है कि सभी मनुष्य अनुभव करते है कि मैं हूं।कोई मनुष्य यह अनुभव नहीं करता है कि मैं नहीं हूँ। यदि आत्मज्ञान सिद्ध न होता तो मनुष्य उसके नास्तित्व का अनुभव करते। किन्तु ऐसा वह अनुभव नहीं करते है। अतः आत्मा है।

सर्वो हि आत्मास्तित्वं प्रत्येति,नाहमस्मीति।
यदि हि नात्मास्तित्व प्रसिद्धः स्थात्, सर्वोलोको नाहमस्मीति प्रतीयात्।[06]

ऋग्वेद में ब्रह्म विचार

ऋग्वेद में प्रत्यक्षतः ब्रह्म अथवा आत्मा का वर्णन प्राप्त नहीं होता किन्तु एक ऐसी शक्ति का वर्णन प्राप्त होता है जैसा वर्णन अद्वैत वेदान्त में आत्मा या ब्रह्म का किया गया है। जिस तरह अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म से ही सृष्टि की उत्तप्ति बतायी गयी है उसी प्रकार ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में विस्तार से वर्णन करते हुए कहा गया है कि एक ऐसा समय था जब न सत् था न असत् था न रज था न व्योम् था। तब न कोई किसी के आश्रय में था और न कोई आवरण करने वाला था। न मरण था और न अमरत्व था। न दिन थे न राते । उस समय केवल एक ही तत्व विद्यमान था, जो अपनी ही शक्ति से रह रहा था।

नासदासीनो सदासीत् तदानीं नासीद्रजो नो व्योमापरो यत्।
किमारीवः कुहकस्य शर्मन्नम्भः किमासीद गहत गम्भीरम् ॥[07]
न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रज्या अह्न आसीद प्रकेतः।
आदीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन पुरः किंचनास ॥[08]
तमासीत् तमसा गूढ़मग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छयेनाभ्यपिहितं सदासीत् तपसस्तन्महिना जायतैकम् ॥[09]

श्रृष्टि की उत्पत्ति की पूर्व की दशा में अपनी ही शक्ति पर आश्रित नासदीय सूक्त के जिस एक तत्व की सत्ता थी तथा जिसके तप से सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ, विवध प्रकार की यह सृष्टि जिससे अविर्भूत हुई है वह अद्वैत वेदान्त के ब्रह्म का ही द्योतक है। नासदीय सूक्त में प्रयुक्त 'एकम्' पद सम्पूर्ण विश्व की एकता के विचार का मूल है। यह एकता का विचार कि प्रकृति में हम जो कुछ भी देखते है वह एक का विर्वत है। यह तथ्य वेदान्त दर्शन में विर्वतवाद जिसमें सम्पूर्ण विश्व को ब्रह्म का विर्वत माना गया है का उत्स है।

अतत्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः ॥[10]

ऋग्वेद के दशम् मण्डल का पुरुषसूक्त विराट पुरुष से जगत् की उत्पत्ति की व्याख्या करता है जिसके अनुसार विराट पुरूष का सिर आकाश,उसकी नाभि अंतरिक्ष और उसके पैर पृथ्वी तथा कर्ण दिशाएं बन गए। उसके मनस् से चन्द्रमा, उसके नेत्र से सूर्य, उसके मुख से इन्द्र और अग्नि तथा उसकी श्वास् से वायु की उत्पत्ति हुई।

नाभ्यां आसीदन्तरीक्षं शीर्णो द्यौः समवर्तत्।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोतात्तथा लोकाँ अकल्पयत्॥[11]
चन्द्रमा मनसो जातक्षोः सूर्यो अजायत्।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत्॥[12]

इसी प्रकार समाज के चारों वर्णों, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र की उत्पत्ति भी इसी विराट पुरुष से मानी गयी है।

ब्राहम्णोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पद्भयां शूद्रो अजायत॥ [13]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य ऋग्वेद तथा अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म विषयक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कर अद्वैत वेदान्त में आचार्य शंकर द्वारा प्रस्तुत ब्रह्म विषयक विचार का मूल स्रोत क्या है? यह ज्ञात करने का प्रयास करना है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि जिस प्रकार अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म को सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान बताते हुए उसे ही चराचर जगत् की उत्पत्ति, स्थिति तथा विनाश का कारण माना गया है उसी प्रकार ऋग्वेद में भी एक ऐसी शक्ति का वर्णन किया गया है जो सर्वशक्तिमान है तथा सम्पूर्ण जगत् की उत्पत्ति उसी से हुई है। अतः हम कह सकते है कि अद्वैत वेदान्त के ब्रह्म विचार का मूल स्रोत ऋग्वेद है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिन्हा हरेन्द्र प्रसाद (1984), भारतीय दर्शन की रूप रेखा। पृष्ट-289*
2. *पाण्डेय संगम लाल (1987) भारतीय दर्शन का संवेंक्षण, सेन्द्रल पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद।पृष्ट-394*
3. *सिन्हा हरेन्द्र प्रसाद (1984), भारतीय दर्शन की रूप रेखा। पृष्ट-42 तथा पृष्ट-299*
4. *शारीरिक भाष्य 1.1.1.*
5. *ऋग्वेद 10.129.1*
6. *ऋग्वेद 10.129.2*
7. *ऋग्वेद 10.129.3*
8. *वेदान्तसार-47*
9. *ऋग्वेद 10.90.14*
10. *ऋग्वेद 10.90.13*
11. *ऋग्वेद 10.90.12*